शोध प्रस्ताव

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचनात्मक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप की रूपरेखा
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची
वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

डॉ0 अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (खोरठा)
मारवाडी महाविद्यालय,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
Mob. No. : 9835194337
Emial ID : awadhbihari.mahto136@gmail.com

शोधार्थी

राजकुमार मुण्डा
यू०जी०सी–नेट / जे०आर०एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
Mob. No. : 9661856972
Emial ID : kraj72710@gmail.com

<u>शोध प्रारूप</u>

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचनात्मक अध्ययन

भूमिका :

झारखण्ड एक बहुभाषिक राज्य है। यहाँ तीन भाषा परिवार आर्य, द्रविड़ एवं मुण्डा परिवार की भाषाएँ बोली जाती है। आर्य भाषा परिवार की भाषाएँ सदानी नाम से जानी जाती है। झारखण्ड में हजारों वर्षों से निवास करने वाली गैर–जनजातीय समुदाय को सदान नाम से जाना जाता है। सदानों की भाषा आर्य भाषा परिवार की है जो सदानी नाम से जानी जाती है। सदानी चार भाषाओं खोरठा, कुरमाली, नागपुरी एवं पंचपरगनिया का समूह है। सदानी समूह की भाषाओं में खोरठा एकतीस हजार वर्गमील जैसे बड़े क्षेत्र एवं लगभग दो करोड़ जैसी बड़ी जनसंख्या की दैनिक जीवन में प्रयोग की लोकप्रिय भाषा है। इस भाषा क्षेत्र के दायरे में झारखण्ड के चौबीस जिलों में से सोलह जिले आते हैं इसके अंतर्गत रामगढ़, हजारीबाग, बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, पलामू, लातेहार, गढ़वा, चतरा, कोडरमा, दुमका, देवघर, जामताड़ा, पाकुड, गोड्डा एवं साहेबगंज जिले आते हैं। खोरठा भाषा का क्षेत्र नदी, नालों, पहाड़ों जैसी भौगोलिक विविधताओं तथा एकतीस हजार वर्गमील जैसे बड़े क्षेत्र की भाषा होने के कारण इसके कई क्षेत्रीय रूप भी बन गए हैं। इन सभी क्षेत्रीय रूपों में किंचित भिन्नता आ गई है यद्यपि इनका मूल रूप एक ही है।

प्रेरणा :

मेरा जन्म खोरठा भाषा क्षेत्र के अंतर्गत हुआ है। मेरी प्राथमिक शिक्षा गाँव के विद्यालय से हुई। ग्रामीण परिवेश में खोरठा भाषा का व्यवहारिक रूप से प्रयोग में होने से इस भाषा की ओर झुकाव रहा है। जब मैं झारखण्ड की प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था। तैयारी के दौरान खोरठा के विभिन्न लेखकों जैसे– श्री निवास पानुरी, शिवनाथ प्रमाणिक, डॉ० ए०के० झा० आदि की किताबों को पढ़ने का अवसर मिला। तब मुझे खोरठा भाषा की शैक्षिक क्षेत्र में उपयोगिता एवं महता की जानकारी हुई। इस भाषा के विस्तृत अध्ययन के लिए मैंने अपना नामांकन जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची खोरठा विभाग में स्नात्तकोत्तर पाठ्यक्रम में कराया। अध्ययन के क्रम में खोरठा भाषा के विविधता को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। तब मुझे इस भाषा के विविध क्षेत्रीय रूपों की जानकारी हुई। इन क्षेत्रीय रूपों को जानने के बाद इसके विस्तृत अध्ययन की जिज्ञासा हुई और जब मैं यू०जी०सी०–नेट/जे०आर०एफ० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ तो शोध के रूप में खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचनात्मक अध्ययन विषय का चयन किया।

उद्देश्य :

इस शोध को पूरा करने से निम्नलिखित उद्देश्यों को सिद्ध होने की संभावना है।

1. खोरठा भाषा के विविध क्षेत्रीय रूपों की ध्वनि, शब्द, पद, अर्थ एवं वाक्यगत विशेषताओं को चिन्हित कर इसकी आंतरिक रूप को उदघाटित एवं स्थापित करना इस शोध का उद्देश्य है।

2. इन क्षेत्रीय रूपों में आयी विविधताओं के कारणों का पता लगाना।

3. अभी तक इस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है और जो भी हुआ हो वह रैखिक मात्र है। इनका विशेष अध्ययन कर परवर्ती अध्येताओं के समक्ष अध्ययन सामग्री उपस्थित करना।

4. खोरठा के विभिन्न क्षेत्रीय भेदों के अध्ययन द्वारा खोरठा के एक मानक रूप की स्थापना के लिए पूर्व भूमिका तैयार करना।

5. खोरठा के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों के अध्ययन द्वारा उन दिग्भर्मित पाठकों, अध्येताओं के भ्रम को दूर करना हमारा उद्देश्य है जो यह समझते हैं ये अलग–अलग भाषाएँ हैं।

6. खोरठा भाषा के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों उद्भव एवं विकास की भी जानकारी प्राप्त होगी।

7. खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों की साहित्य संस्कृति, इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर का परिज्ञान होगा। साथ–ही–साथ आम लोगों में जन चेतना का संचार होगा।

महत्व :

1. खोरठा के क्षेत्रीय रूपों का अध्ययनों के उपरांत खोरठा के मानक रूप की स्थापना संभव हो पाएगी।
2. खोरठा भाषा के साहित्य लेखन में एकरूपता का विकास होगा।
3. खोरठा शिष्ट भाषा के रूप में पूर्णतः स्थापित होगा।
4. इस शोध के माध्यम से खोरठा भाषा एवं साहित्य के नए शोधार्थियों को ज्ञान अर्जित करने की प्रेरणा मिलेगी।
5. आधुनिक खोरठा भाषा के विकास की चुनौतियों एवं संभावनाओं को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

परिकल्पना :

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व–चिंतन। परिकल्पना किसी अध्ययन को प्रारंभ करने से पूर्व बनाई गई योजना है। अनुसंधान कार्य परिकल्पना निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। जिसके अनुसार अनुसंधान कार्य में आने वाली समस्याओं के समाधान से है। खोरठा भाषा एवं साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्राचीन रही है तथा इतने वर्षों में खोरठा भाषा एवं साहित्य की सभी विधाओं में शोध कार्य चल रही है एवं कई संम्पन्न हो चुका है। इसी दौरान मैं जब खोरठा भाषा से स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम कर रहा था तो मुझे खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचना अध्ययन पर शोध करने की रूचि जगी,

क्योंकि मुझे खोरठा के विभिन्न क्षेत्रीय भेदों को जानने की जिज्ञासा थी। इन क्षेत्रीय रूपों में किन–किन भाषाओं का प्रभाव पड़ा ? किन परिस्थितियों में हुआ ? साथ ही साथ वर्त्तमान परिदृश्य में किस प्रकार से उपयोगी व प्रभावपूर्ण है। अतः मैं ''खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचनात्मक अध्ययन'' के ऊपर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहता हूँ।

शोध प्रविधि :

शोध की प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक सर्वेक्षण आधार पर होगी। यह प्रस्तावित तथ्यों पर आधारित होता है। इस प्रकार यह सुस्पष्ट हो जाता है, कि शोध कार्य बिल्कुल भी काल्पनिक तरीके से एकत्रित नहीं किया जा सकता है, इसके लिए विश्वसनीय तथ्यों, सूचनाओं, आँकड़ों आदि को संकलित करने की निम्नलिखित प्रविधियाँ हो सकती है–

1. साक्षात्कार विधि
2. अवलोकन विधि
3. प्रश्नावली विधि
4. आलोचनात्मक विधि
5. तुलनात्मक विधि
6. विश्लेषणात्मक विधि

उपकरण :

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है–

1. मोबाईल

2. कैमरा(शोध सम्बंधित चित्रों एवं वीडियों संग्रह के लिए आवश्यक)

3. कम्प्यूटर, इटरनेट(शोध संबंधी अन्य जानकारी हेतु)

4. पेपर

5. मानचित्र

6. कागज, कलम

7. टेप रिकॉर्डर

8. शोध विषय से संबंधित शोध प्रबंध, पुस्तके, प्रकाशित रचनाएँ संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

शोध प्रारूप

खोरठा भाषा के क्षेत्रीय रूपों का विवेचनात्मक अध्ययन

अध्यायीकरण

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है–

प्रथम अध्याय : खोरठा भाषा का सामान्य परिचय

(क) खोरठा शब्द की उत्पत्ति एवं नामकरण
(ख) भाषा का क्षेत्र, क्षेत्रफल, जनसंख्या
(ग) खोरठा सम्पर्क भाषा के रूप में
(घ) झारखण्ड की भाषा सांस्कृतिक परिदृश्य
(ङ) खोरठा के विविध क्षेत्रीय रूप
(च) क्षेत्रीय रूपों की अवधारणा और नामकरण

द्वितीय अध्याय : सिखरिया खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र विस्तार
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

तृतीय अध्याय : गोलवारी खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र विस्तार
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

चतुर्थ अध्याय : रामगढ़िया खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र विस्तार
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

पंचम् अध्याय : देसवाली खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र सीमांकन
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

षष्ठ अध्याय : पारनदिया खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र सीमांकन
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

सप्तम् अध्याय : संथालपरगनिया खोरठा

(क) नाकरण का आधार
(ख) क्षेत्र सीमांकन
(ग) ध्वनि विशेषता
(घ) शब्द रचना
(ङ) पद संरचना
(च) वाक्य व्यवस्था
(छ) अर्थगत भिन्नता

उपसंहार

परिशिष्ट

- आधार ग्रंथों की सूची
- संदर्भ ग्रंथों की सूची
- पत्र–पत्रिकाओं की सूची
- साक्षात्कार
- चित्रावली

नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ0 अवध बिहारी महतो
सहायक प्राध्यापक
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग (खोरठा)
मारवाडी महाविद्यालय,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
Mob. No. : 9835194337
Emial ID : awadhbihari.mahto136@gmail.com

शोधार्थी

राजकुमार मुण्डा
यू०जी०सी–नेट / जे०आर०एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।
Mob. No. : 9661856972
Emial ID : kraj72710@gmail.com

आधार ग्रंथ सूची

1. आला, कृष्ण चन्द्र दास, खोरठा भाखा ग्रहण, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो 1997
2. ओहदार, डॉ० बी०एन०, खोरठा भाषा एवं साहित्य(उद्भव एवं विकास), खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
3. कुमार, डॉ० अरविंद, खोरठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा राँची, 2014
4. कुमार, डॉ० दिनेश, खोरठा भाषा का तात्विक अध्ययन, शोध ग्रंथ, 2024
5. कुमारी, डॉ0 अर्चना, खोरठा शिष्ट साहित्य एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, 2015
6. झा, डॉ० ए० के०, खोरठा भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची, 2012
7. झा, डॉ० ए० के०, खोरठा सहित सदानिक व्याकरण, खोरठा ढाकी छेतर कमिटी, कोठार रामगढ़, 2010, 2018
8. प्रभाकर, डॉ0 गजाधर महतो, खोरठा भाषा एवं साहित्य, सफल प्रकाशन, राँची, 2017
9. महतो, डॉ० अवध बिहारी, खोरठा साहित्य की सांस्कृतिक चेतना, संवाद मीडिया, नई दिल्ली, 2018
10. सिन्हा, डॉ० शिव नंदन प्रा0, मगही एवं खोरठा का तुलनात्मक अध्ययन, केदारनाथ एंड संस, मथुरा, 2017
11. वंशी, वंशीलाल, खोरठा दर्पण, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद् बोकारो, 1998

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अनुज, डॉ0 भुनेश्वर, नागपुरी लोकसाहित्य, भुवन प्रकाशन साहु टोली, बहु बाजार, राँची, 1992
2. ओहदार, डॉ० बी० एन०, खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार राँची 1990
3. कुमार, डॉ० अमित, श्याम सुंदर महतो और उनका रचना संसार : एक विश्लेषण, डॉल्फिन, धनबाद, 2024
4. कुमार, डॉ० विनोद, सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची, 1990
5. कुमारी, डॉ० अहिल्या, खोरठा काव्य में नौ रस, संवाद मीडिया, नई दिल्ली, 2018
6. केशरी, डॉ0 बिसेश्वर प्रसाद, नागपुरी भाषा उद्गम और विकास, नागपुरी संस्थान, पिठोरिया, राँची, 2000
7. केरकेट्टा, डॉ० एमलीन, नागपुरी एवं पंचपरगनिया व्याकरण एक तुलनात्मक अध्ययन, सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2018
8. ग्रियर्सन, सर जार्ज अब्राहम, भारत का भाषा सर्वेक्षण, प्रकाशन शाखा सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, 1903
9. गोस्वामी, मनपूरन, परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006
10. झा०, डॉ० ए० के० खोरठा गइद पइद संगरह, बोकारो खोरठा कमिटी बोकारो इस्पात नगर, 1989
11. झा, डॉ० गोबिंद, मैथली भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2008
12. टन्डन, डॉ0 प्रेम नारायण, भाषा अध्ययन के आधार, प्रेमनारायण टन्डन, लखनऊ, 1958

13. तिवारी, डॉ० भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद. 1993
14. दीक्षित, डॉ० मीरा, भाषा विज्ञान के सिद्धांत, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008
15. पानुरी, श्रीनिवास. चाभी काठी. बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, झारखण्ड, 2006
16. महतो, वासुदेव, खोरठा बेयाकरनेक दमराही, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़, 2008
17. महतो, डॉ हीरालाल, खोरठा भाषा व्याकरण का विश्लेषण, शोध ग्रंथ, 2024
18. महतो, वासुदेव, खोरठा व्याकरण कर एक खेमचा, रॉयल प्रकाशन, सेवासदन पथ राँची
19. सिंह, डॉ० नन्दकिशोर, कुरमाली भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, युगल किशोर ट्रस्ट, राँची, 2008

खोरठा पत्र–पत्रिकाएँ

1. इंजोर, धनंजय प्रसाद, मधुपुर, देवघर, 1997, देवघर, 1998–99
2. खोरठा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
3. तितकी, विश्वनाथ दसौंधी 'राज', कतरासगढ़, धनबाद, 1977–78
4. तितकी, ए.के.झा, ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
5. लुआठी, गिरिधारी गोस्वामी 'आकाशखूँटी', बालीडीह, बोकारो, 1999
6. सहिदान, फाल्गुनी मरीक कुशवाहा, गिरीडीह, 2002
7. सहिया, अनिल कुमार 'विस्थापित', बोकारो, 2002
8. प्रभात खबर, (हिन्दी दैनिक), विजय पाठक, राँची
9. मातृभाषा, श्रीनिवास पानुरी, बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
10. करील, डॉ० बी0एन0 ओहदार, कतरासगढ़, धनबाद, 1977